Toppersnotes
Unleash the topper in you

CGPSC

State Civil Services

Chhattisgarh Public Service Commission

(Preliminary & Main)

भाग - 1

भारत का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

CGPSC

CONTENTS

भारत का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास

1.	परिचय	1
	प्राचीन भारत	
2.	हडप्पा सभ्यता	17
3.	वैदिक काल	37
4.	बुद्धकाल	48
5.	मौर्य साम्राज्य	69
6.	मौर्योत्तर काल	82
7.	गुप्तकाल	101
	मध्यकालीन भारत	
1.	पूर्वमध्यकाल	114
2.	दिल्ली सल्तनत	130
3.	मुगलकाल	145
❖	दक्षिण भारत	160

भारत का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास

परिचय

भारत का इतिहास एवं संस्कृति

(Indian History and Culture)

इतिहास में वर्तमान में रहकर मानव अतीत/ भूत का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है । कुछ निश्चित साक्ष्यों (साहित्यिक एवं पुरातात्विक) के सहारे अतीत की दोबारा पुनर्रचना की जाती है । इस रूप में इतिहास वर्तमान एवं भूत के बीच एक संवाद (Dialogue) कायम करता है । E.H. कार के अनुसार इतिहास के तहत किसी कालखंड में मानव समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति का अध्ययन किया जाता है ।

इतिहास			
संस्कृति	समाज	अर्थ–व्यवस्था	राजनीति
कला, धर्म, दर्शन, विज्ञान, त्यौहार, रीति–रिवाज आदि	वर्ण, जाति, अधिकार, महिलाओं की स्थिति, शिक्षा, मनोरंजन के साधन आदि का अध्ययन	कृषि, व्यापार, वाणिज्य, उद्योग, नगरीकरण	राजनीति का स्वरूप, प्रशासन की विशेषता

इतिहास एवं काल विभाजन

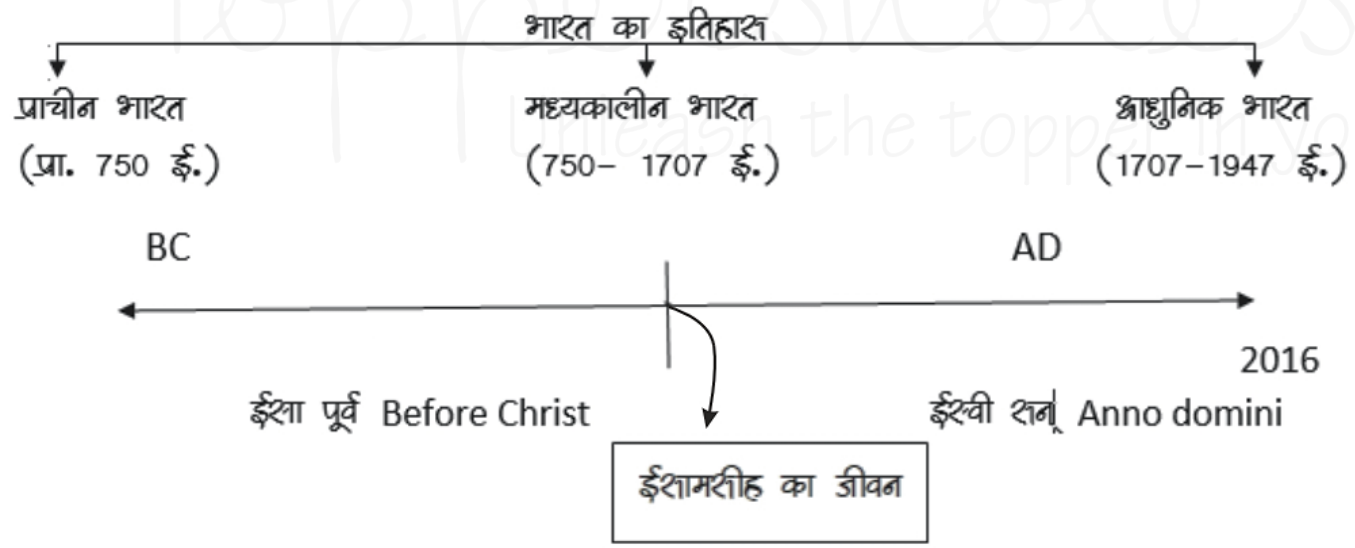

प्राचीन भारत

1. पाषाण काल – { विश्व संदर्भ (20 लाख ई.पू. – 3000 ई.पू.) (प्राक् इतिहास)
   भारतीय संदर्भ (5 लाख ई.पू. – 3000 ई.पू.)
2. हड़प्पा सभ्यता (2600 – 1900 ई.पू.) }
3. वैदिक काल (1500 – 600 ई.पू.) }
4. मौर्यकाल/ बुद्धकाल (600 – 321 ई.पू.)

5. मौर्यकाल (321 – 185 ई.पू.)
6. मौर्योत्तर काल (200 ई.पू. – 300 ईस्वी)

7. गुप्त काल (319– 550 ईस्वी)
8. गुप्तोत्तर काल (550 – 750 ईस्वी)

इतिहास की शब्दावलियाँ (Glossary of History)

1. प्राक् इतिहास (Pre History) – लगभग 20 लाख – 3000 ई.पू. तक का कालखंड । इसे जानने के लिए लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है ।
   अतः पुरातात्विक सामग्रियों (जीवाश्म, पत्थर के औजार, मृदभांड, हड्डियाँ आदि) के सहारे इसे जाना जाता है।
2. आद्य इतिहास (Proto History) – लगभग 3000 – 600 ई.पू. का कालखंड। इस काल का लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध है लेकिन इसे पढा नहीं जा सका है । अतः इसे भी पुरातत्व के सहारे जाना जाता है। उदा. – हडप्पा सभ्यता
3. इतिहास (History) – 600 ई.पू. से आगे का कालखंड । यहाँ से लिखित साक्ष्य भी मिलने प्रारम्भ होते हैं जिन्हें पढ लिया गया है ।
4. संस्कृति (Culture) – किसी स्थान या देश विदेश के लोंगों की जीवनशैली को संस्कृति कहा जाता है। इसके तहत कला, धर्म, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, भाषा, खानपान, वेशभूषा, रीति–रिवाज, आचारः व्यवहार आदि आता है। इसका निर्माण विभिन्न पीढियों के सामूहिक योगदान से एक लम्बे कालखंड के तहत होता है। संस्कृति सदैव सतत् रूप से (Continuously/Gradually) विकसित होती रहती है।
5. सभ्यता (Civilization) – संस्कृति के मानकीकरण की व्यवस्था सभ्यता कहलाती है। मानव द्वारा जब उन्नत तकनीकी तथा उच्च आर्थिक एवं भौतिक समृद्धि की व्यवस्था प्राप्त कर ली जाती है तब इसे सभ्यता की व्यवस्था कहा जाता है । नगरीकरण सभ्यता का आवश्यक लक्षण होता है ।

1. पाषाण काल (20 लाख ई.पू.)

मानव उद्विकास | हिमकाल | पाषाण उपकरण एवं काल विभाजन

मानव उद्विकास – पृथ्वी पर मानव जाति बनी बनायी अवतरित नहीं हुई है । बल्कि अपने पूर्ववर्ती जीव रूपों से इनका उद्विकास हुआ है ।

1859 में चार्ल्स डार्विन की पुस्तक ऑरिजन ऑफ स्पीसीज के प्रकाशन के बाद मानव को उद्विकास का परिणाम माना गया । चार्ल्स डार्विन के सिद्धान्त – प्राकृतिक चयन (Theory of natural selection) तथा योग्यतम उत्तरजीविता (Survival of the best) के सिद्धान्त को अन्य जीवों के साथ–साथ मानव पर भी लागू किया जाता है ।

तमाम प्रयोगों से यह बात साबित हो चुकी है कि लगभग 20 लाख ई.पू. से 10 हजार ई.पू. तक प्राइमेट से मानव का उद्विकास हुआ । जिसे निम्नवत देखा जा सकता है –

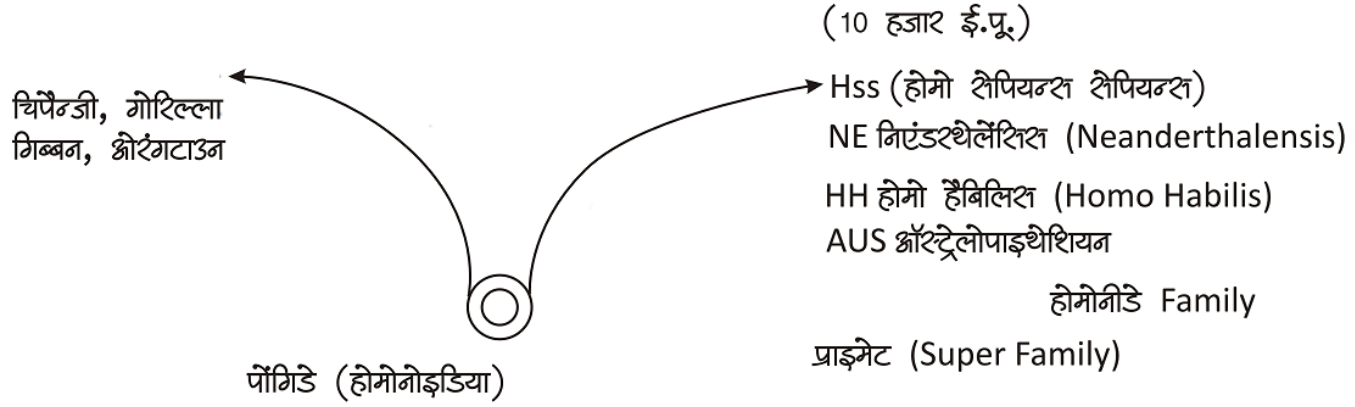

लगभग 26 लाख ई.पू. के आस- पास प्राइमेट से ऑस्ट्रेलोपिथेकस के रूप में प्रथम होमोनीडे का उद्‌भव हुआ । प्राइमेट तथा ऑस्ट्रेलोपिथेकस के बीच मुख्य अंतर यह था कि वह **(Australo)** दो पैरों पर चल सकता था । धीरे-धीरे होमोनीडे की विभिन्न प्रजातियों का विकास हुआ । कालक्रम में मानव की कपाल धारिता **(Cranial Capacity)** बढती गई । कई शारीरिक लक्षण उभरते गये । महत्वपूर्ण जीनिक **(Genetic)** परिवर्तन होते गये तथा मानव में बौद्धिक एवं कलात्मक प्रतिभा का विकास हुआ । परिणामस्वरूप भाषा, संचार, कला, ज्ञान, धर्म, विज्ञान, दर्शन, रीति-रिवाज आदि के रूप में मानव संस्कृति का विकास हुआ ।

उपप्रकार	**Man**	**CC**	**Tools**	महत्वपूर्ण विशेषता
1. आस्ट्रे. अफ्रीकेनुस 2. आस्ट्रे. रोबोस्टस 3. जेजोनथ्रोपस (ब्रोइसई)	ऑस्ट्रेलोपिथेकस (26 लाख ई. पू.) होमो हैबिलिस **Homo Habilis** (20 लाख)	450 – 500 **CC** 700 **CC** 800 **CC**	**Pebble** (नदियों के बहाव से निर्मित औजारों का प्रयोग) ओल्डुवा	1. मुख्यतः शाकाहारी था । 2. केवल दक्षिणी-पूर्वी अफ्रीका तक सीमित 1. प्रथम उपकरण निर्माता मनुष्य 2. शाकाहारी के साथ साथ मांसाहारी लेकिन छोटे जानवरों का शिकार 3. दक्षिणी – पूर्वी अफ्रीका तक सीमित
1. पिथेकैंथ थ्रोपस 2. जावामैन 3. पिकेनसिस	होमो इरेक्टस **Homo Erectus** (17लाख)	850 – 1100 **CC**	**Handaxe** हस्तकुठार क्लेक्टोनी लेवालोसियन (गोलाकार) (कछुए के आकार का)	1. प्रथम मनुष्य जो अफ्रीका के बाहर निकला, एशिया तथा यूरोप से भी साक्ष्य प्राप्त 2. यह मैमथ जैसे बडे जानवरों का शिकार करता था । 3. आग का आविष्कार करने वाला प्रथम मनुष्य
	नियन्डरथल (1.35 लाख)	1100 – 1400 **CC**	**Flake** (फलक) औजारों का बेहतर प्रयोग करने वाला मुस्तुरिया फ्रांस (संस्कृति का निर्माता)	1. यह पूर्व से भी अधिक दक्ष शिकारी मानव था । 2. यह प्रथम मनुष्य था जिसने शवों को दफनाने की प्रक्रिया का प्रारम्भ किया ।

1. क्रोमैमनेन (फ्रांस) 2. ब्रोकनहिल (प.एशिया) 3. ग्रिमाल्डी (आस्ट्रेलिया) 4. तंसलाद (South Africa)	**Homo sapiens** (40 हजार से 10 हजार ई.पू.)	1300 – 1600 **CC**	**Flake** के और बेहतर औजारों का निर्माण हड्डी + जानवरों के सींग द्वारा बने औजारों का प्रयोग	1. सर्वाधिक दक्ष शिकारी 2. स्पष्ट भाषा बोलने वाला एवं संचार करने वाला मानव 3. उच्चस्तरीय कला का प्रदर्शन करने वाला मानव (मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य आदि) उदा.– फ्रांस के लास्काव स्पेन के अल्तामीरा तथा भारत के भीमबेटका की गुफाओं से सुंदर चित्रकारियाँ प्राप्त हुई है ।

मानव उद्विकास एवं विसरण का सिद्धान्तः– जीव विज्ञान में माना जाता है कि प्रारंभिक मानव का विकास सर्वप्रथम दक्षिणी–पूर्वी अफ्रीका में हुआ तथा यहीं से मानव जाति का प्रसार सम्पूर्ण विश्व में हुआ। इसके वैज्ञानिक तथा पुरातात्विक दोनों साक्ष्य उपलब्ध है।

वैज्ञानिक साक्ष्य – **Human** जीनोम प्रोजेक्ट (**DNA**) द्वारा जीन (**DNA**) की कडियों को जोडकर मातृवंशावली तैयार की गई है जो अंतिम रूप से अफ्रीका में जाकर समाप्त हो जाती है ।

पुरातात्विक साक्ष्य – अफ्रीका की रिफ्ट घाटी (युगांडा, खांडा, तंजानिया, केन्या) में ओल्डवाईगार्ड (तंजानिया) तथा तुरकानाझील (केन्या) आदि स्थलों से प्रारंभिक मनुष्यों के जीवाश्मों तथा पत्थर के औजारों की साथ–साथ प्राप्ति हुई है ।

उद्विकास के दौरान मानव एवं पर्यावरण सम्बन्ध

(26 लाख – 10 हजार ई.पू.)

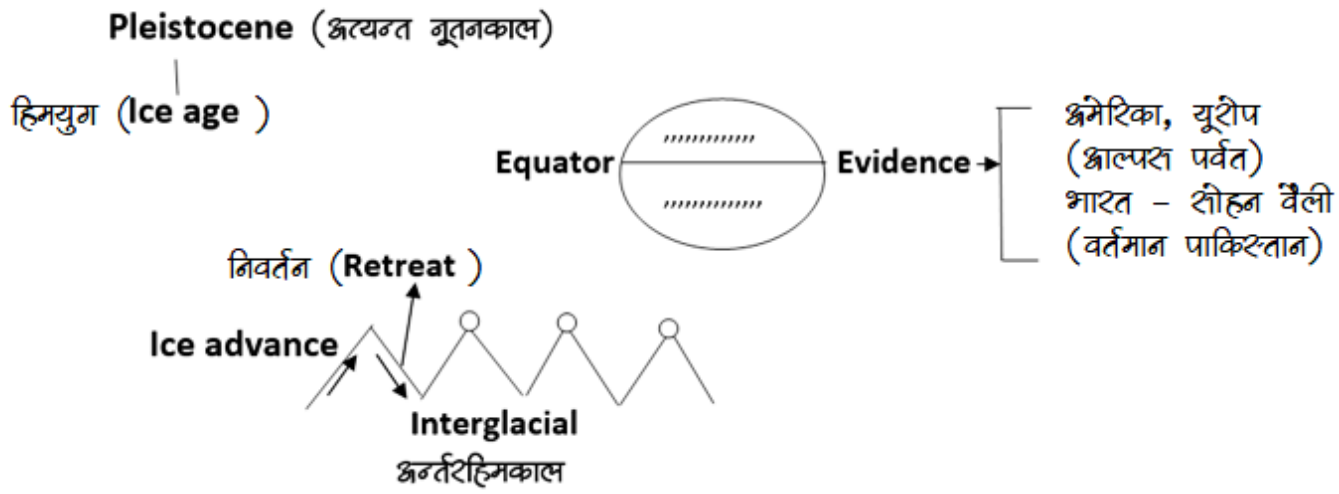

जिस समय मानव का उद्विकास हो रहा था भूमध्य रेखा को छोडकर पूरी पृथ्वी पर बडे–बडे हिमयुग के दौर आते रहते थे। बर्फ की आँधियां चला करती थी । कभी–कभी दो बडे हिमकालों के बीच मौसम थोडा सा गर्म एवं शुष्क होता था जिसे अंतःहिमकाल कहा गया है। इन्हीं चरम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए मानव ने अपनी उत्तरजीविता कायम की ।

पाषाण उपकरण एवं काल विभाजनः– अपने विकास के दौरान मानव ने पत्थर के विभिन्न प्रकार के औजारों का निर्माण किया। इन्हें इनके आकार प्रकार तथा बनावट के आधार पर तीन भागों में बाँटकर देखा जाता है। जो निम्न है –

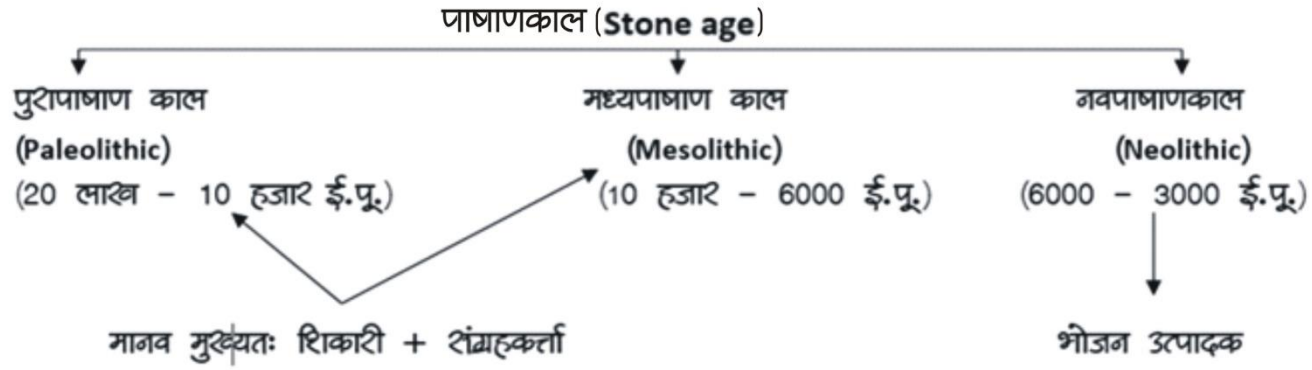

1. Human Evolution

2 प्लेइस्टोसीन युग (Pleistocene Age)
हिम युग (Ice Age)

3. पाषाण काल (Stone Age)

पुरापाषाण
Paleolithic
(20 लाख – 10 हजार)
शिकारी + संग्रहकर्ता

मध्यपाषाण
Mesolithic
(10 – 6000 ई.पू.)
Transition
संक्रमण काल

नवपाषाण
Neolithic
(6000– 8000)
उत्पादक मानव
कृषि व पशुपालन
स्थायी आवास
मृदभाण्ड

शिकारी संग्रह अवस्था से मानव के भोजन उत्पादन अवस्था में बदलाव के कारण

1. जलवायु परिवर्तन का सिद्धान्त – R पेम्पली गार्डन चाइल्ड

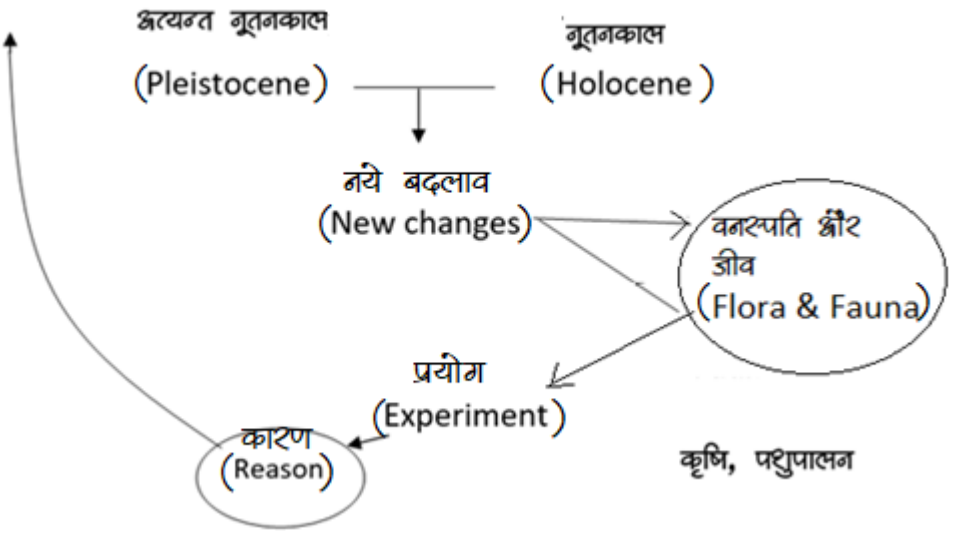

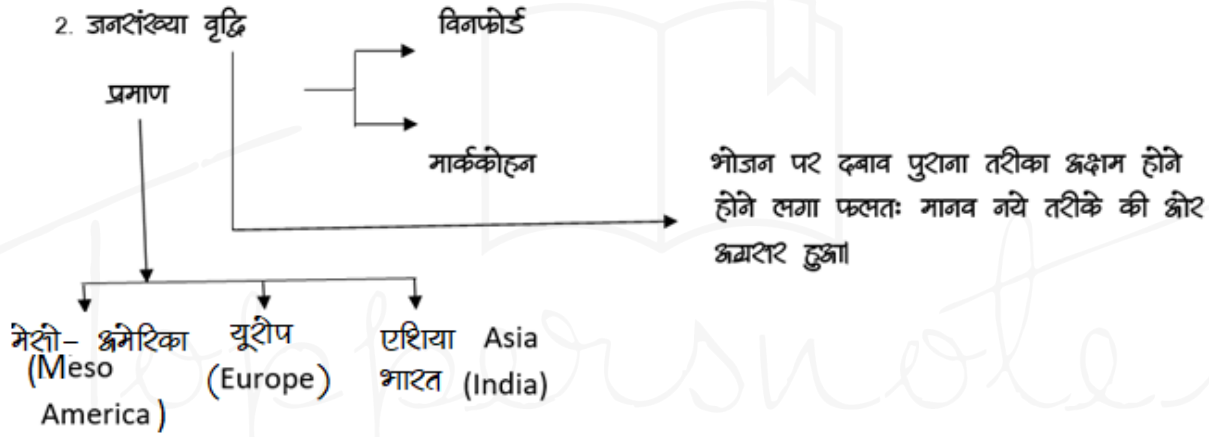

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3. <u>सांस्कृतिक कारण – ब्रेडवुड</u>

पूर्व में विकास इसलिए नहीं हुआ कि मानव संस्कृति इसके लिए तैयार नहीं थी। मध्यपाषाण काल तक आते-आते मानव ने आपसी विनिमय उपहार, विवाह, नातेदारी प्रारम्भ किया।

↓

New Development हुये।

4. उत्पादन सम्बन्ध का सिद्धान्त – वारवरा वेण्डर

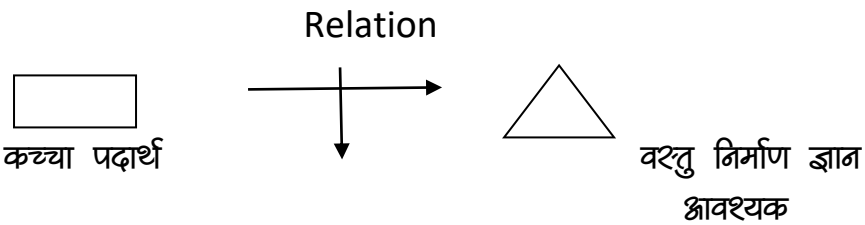

मूल्यांकनः–

शिकारी संग्रहकर्त्ता से भोजन उत्पादन की अवस्था में बदलाव एक बडा परिवर्तन था । अतः किसी एक कारण मानव को इसके लिए जिम्मेदार नहीं माना जा सकता । कमोबेश सभी कारण इसके लिए उत्तरदायी रहे होंगें ।

भारत में पाषाणकाल (Stone age in India)

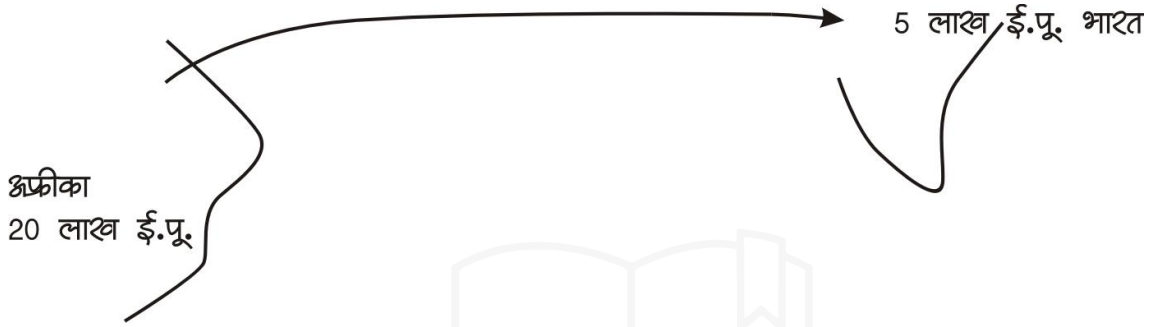

जिस प्रकार मानव के जीवाश्म अफ्रीका, यूरोप तथा एशिया के अन्य भागों से प्राप्त होते हैं जलवायु सम्बन्धी समस्या के कारण भारत में इस प्रकार के साक्ष्य नहीं मिलते हैं । अतः भारत में पाषाणकाल का अध्ययन पत्थर के औजारों तथा दूसरे पुरातात्विक सामग्रियों के सहारे किया जाता है । जो निम्न हैं –

भारत में पाषाणकाल **Stone age in India**

पुरापाषाण काल	मध्यपाषाण काल	नवपाषाण काल
(5 लाख–10 हजार)	(10–6000)	(6000– 3000)

पुरापाषाण काल :– यह एक लम्बा काल था । अतः इसे तीन भागों में बाँटकर अध्ययन किया जाता है

निम्नपुरापाषाण	मध्यपुरापाषाण	उच्चपुरापाषाण
Lower Paleolithic	**Middle Paleolithic**	**Upper Paleolithic**
(5 लाख – 50 हजार)	(50 हजार – 40 हजार BC)	(40 हजार – 10 हजार)

निम्नपुरापाषाण काल

Tools – उपकरण, **Site**– स्थल **important features**– मुख्य विशेषताएँ

(a) औजार – इस काल में मानव ने मुख्यतः कोर (core) उपकरणो का निर्माण किया है जो क्वार्टजाइट जैसे कठोर पत्थरों के बने हैं। मुख्य औजारों में **Handaxe** (हस्तकुठार), क्लीवर (विदारणी), चापर तथा चापिंग आते है।

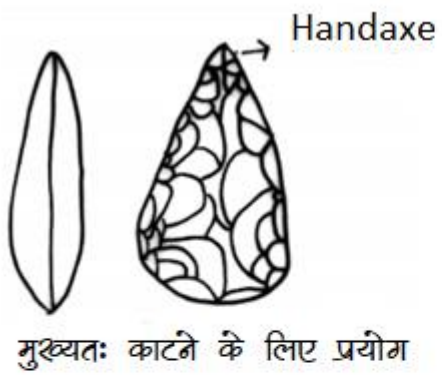

मुख्यतः काटने के लिए प्रयोग

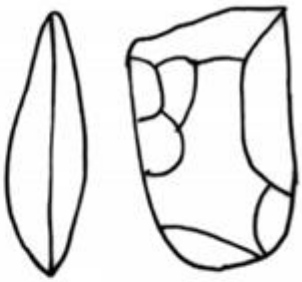
क्लीवर
छिलने के लिए प्रयोग

Unifacial
एक ही कार्य धार

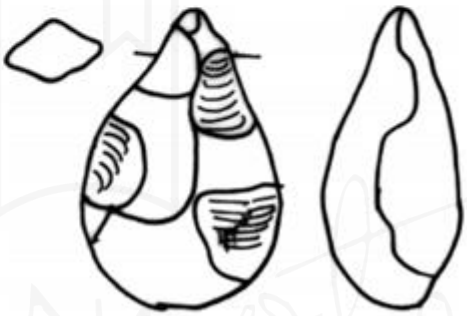
दोनों तरफ कार्य धार

(b) <u>स्थल</u> – भारत में इस काल के मुख्य स्थल निम्न है ।

(1) सोहन घाटी (पाकिस्तान)–यह एक प्रतिनिधि स्थल है ।

(2) बेलनघाटी (इलाहाबाद,मिर्जापुर क्षेत्र) – यहाँ से पाषाणकाल की तीनों अवस्थाओं के साक्ष्य मिलते है ।

(3) डीडवाना (राजस्थान)

(4) भीमबेटका (मध्य प्रदेश)

(5) दक्षिण भारत –पल्लवरम, अतिरपक्कम, गिद्दलूर (तमिलनाडु)

(C) <u>मुख्य विशेषताएँ</u>

(1) भारत में पहला Handaxe पल्लवरम (चेन्नई के पास) से राबर्टब्रशफुट ने प्राप्त किया था (1863) अगला Handaxe अतिरपक्कम से मिला था ।

(2) भारत में केवल केरल तथा ऊपरी गंगा घाटी को छोडकर सभी स्थानों से निम्न पुरापाषाणकालीन स्थल प्राप्त हुये है ।

(3) विश्व संदर्भ में ऑस्ट्रेलोपिथेकस hh तथा he तीनों निम्नपुरा–पाषाणकाल से आते है ।

मध्यपुरापाषाण काल

(a) औजार : इस काल में मानव के औजार निर्माण में बदलाव हुआ । इसके तहत उसने कोर के बजाय **Flake** (पपडी फलक) पर भारी संख्या में निर्माण किया है । अतः इसे फलक संस्कृति का काल भी कहा जाता है । ये औजार चर्ट + जैस्पर जैसे नरम पत्थरों के बने है ।

(b) मुख्य स्थल : भारत में नेवासा (गोदावरी तट महाराष्ट्र) तथा नर्मदा घाटी में इस काल के स्थल प्राप्त हुये है ।

(c) मुख्य विशेषताएँ

(i) नर्मदा घाटी में हथनौरा नामक स्थल से अरुण ढोलकिया ने एक मानव जीवाश्म प्राप्त किया था । इसे हथनौरा नर्मदामैन कहा जाता है । पूर्व में इसे होमो इरेक्टस का जीवाश्म माना गया, लेकिन वर्तमान में इसे आद्य होमो सेपियन्स का जीवाश्म माना जाता है ।

(ii) विश्व संदर्भ में निएन्डरथल का सम्बन्ध इसी मध्यपुरापाषाण काल से है ।

उच्चपुरापाषाण काल

(a) इस काल तक आते आते मानव आधुनिक हो चुका था । अतः उसकी गतिविधियों में पूर्व की अपेक्षा और तेजी से वृद्धि हुई । इसकी विशेषताएं निम्न है –

I. Blade, point Boxer जैसे बेहतर फलक औजारों का निर्माण ।
II. हड्डी के औजारों का निर्माण ।
III. मछली मारने वाले काँटे (हारपून) का प्रयोग ।
IV. इस काल में मानव ने कलाओं (मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्य, संगीत आदि) का बेहतर प्रदर्शन किया है ।

कला के साक्ष्य (भारत में)

(a) मूर्तिकला : इस काल में मानव द्वारा वीनस (मातृदेवी) की मूर्तियों का निर्माण किया गया । बेलनघाटी में लोहदानाला नामक स्थल से अस्थि की बनी मातृदेवी की मूर्ति प्राप्त हुई है ।

(b) चित्रकारी पाषाणकालीन चित्रों की विशेषताएँ

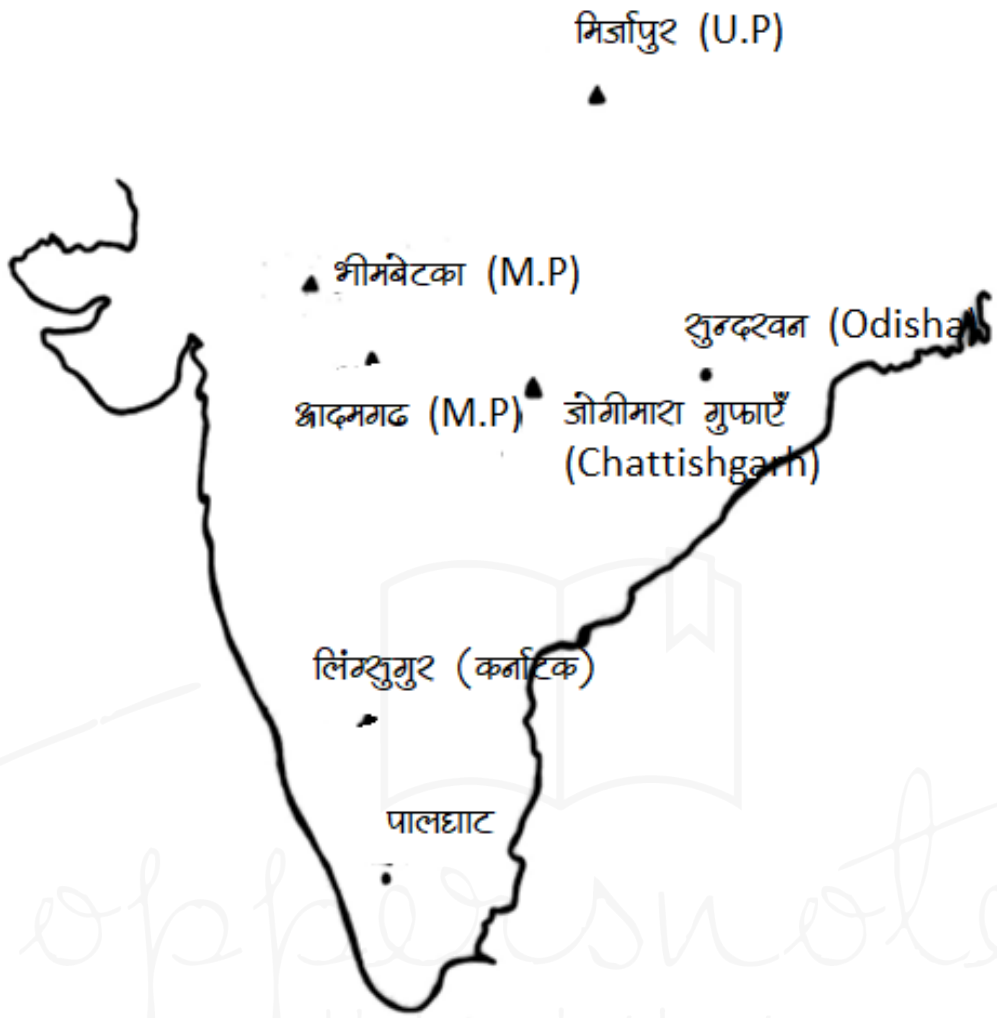

(1) पाषाणकालीन चित्रों को गुफाओं की दीवारों तथा फर्शों पर पत्थर के नुकीले औजार से खुरदुरा बनाकर चित्रित किया गया है ।

(2) गेरूआ तथा (मुख्य रंग), सफेद, हरा, पीला, आदि रंगो का प्रयोग किया गया है ।

(3) रंगों का निर्माण प्राकृतिक पदार्थों (वनस्पति ,खनिज आदि) से किया गया है। इसे तेलीय बनाने के लिऐ अण्डे की जर्दी तथा पशुओं की चर्बी का मिश्रण किया गया है ।

(4) चित्रों का विषय शिकार तथा दैनिक जीवन से सम्बन्धित है। हिरण, बारहसिंहा, नीलगाय, सुअर, जंगली भैंसा आदि जानवरों को घेरकर शिकार करते हुए चित्र बनाये गये है । (कुछ विद्वानों का कहना है कि ऐसा उन्होनें जादुई विश्वास के कारण किया है ।)

(5) भीमवेटका (मध्य प्रदेश) भारत का पाषाणकालीन चित्रों की दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध स्थान है । इसकी लगभग 500 से अधिक गुफाओं में सैकडों चित्र प्राप्त होते है । भीमवेटका के चित्रों नृत्य करते हुए, मदिरापान करते हुए, जुलूस में भाग लेते हुए चित्रों को काफी बेहतर चित्र माना जाता है । भीमवेटका के चित्र यूनेस्को के विश्व धरोहर की सूची में शामिल है ।

मध्यकालीन भारत

पूर्व मध्यकाल (750–1206 ई.) | दिल्ली सल्तनत (1206–1526 ई.) | मुगलकाल (1526–1707 ई.)

पूर्व मध्यकालीन भारत/राजपूत काल/सामंतवाद का युग (750–1260ई.)

- परिचय
- राजनीति एवं प्रशासन
- समाज
- अर्थव्यवस्था
- संस्कृति
  - भाषा साहित्य
  - कला
  - धर्म/दर्शन

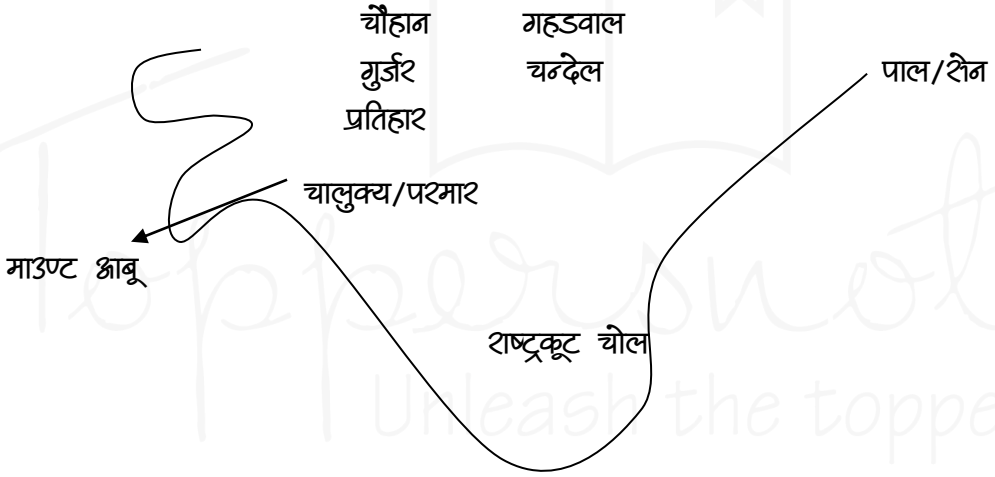

हर्ष के मृत्यु के बाद पुनः एक बार छोटे छोटे राज्य उठ खड़े हुए। 700–1200 ई. के बीच उत्तर भारत में कोई ऐसी शक्ति नहीं थी जो सभी को एक राजनीतिक सूत्र में पिरो सके। इस समय अनेक स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई। इनमें से अधिकांश शासक खुद के लिए राजपूत काल कहा जाता है।

महत्वपूर्ण राजपूत राजवंश

वंश	राजधानी	संस्थापक
1. गुर्जर प्रतिहार (गुजरात में UP)	उज्जैन कन्नौज	हरिश्चन्द्र
2. गहड़वाल (UP)	वाराणसी	चन्द्रदेव गहड़वाल
3. पाल (बंगाल)	मुद्गगिरि वारेन्द्री	गोपाल (निर्वाचित राजा)

4. सेन (बंगाल)	वारंगिली	सामंतसेन, विजयसेन
5. चौहान (राजस्थान से दिल्ली)	शाकम्भरी अजमेर	अजयराज वाकपति
6. चन्देल (UP से MP)	खजुराहो महोबा	यशोवर्मन, नहुक
7. परमार (गुजरात से MP)	धारा भोजपुर	उपेन्द्र, सिथक III
8. चालुक्य (गुजरात)	अन्हिलवाड	मूलराज
9. कल्चुरी (MP)	त्रिपुरी	गंगदेव

राजपूतों की उत्पत्ति का सिद्धान्त

पूर्व मध्यकालीन अधिकांश शासक खुद के लिए राजपूत पदवी ग्रहण करते थे। यह शब्द प्राचीन भारत में नहीं मिलता है । अतः राजपूत कौन थे? उनकी उत्पत्ति कैसे हुई ? यह इतिहासकारों के बीच एक बहस का मुद्दा रहा है । इस संदर्भ में कई मत दिए गये हैं । जो निम्न हैं –

1. ब्राह्मणों से उत्पत्ति का सिद्धान्त – गौरी शंकर ओझा
Ex : सेन – जो पहले ब्राह्मण थे बाद में क्षत्रिय हो गये।
2. विदेशियों से उत्पत्ति का सिद्धान्त – ईश्वरी प्रसाद, भण्डारकर कर्नल टॉड – सीथियन से उत्पत्ति हुई।
3. क्षत्रियों से उत्पत्ति – कनिंघम
4. अग्निकुण्ड का सिद्धान्त – चन्दरबरदाई – पृथ्वीराज रासो में

माउण्टआबू
अग्निकुंड —— **P-** पंरमार
वशिष्ठ ने यज्ञ किया
P- प्रतिहार
P- चौहान
P- चालुक्स (सोलंकी)

5. मिश्रित उत्पत्ति का सिद्धान्त – सर्वमान्य मत

Ruling class

विदेशी राजपूत → **B**, **K**, **V**, **S/ Tribe**

कन्नौज पर प्रभुत्व के लिए संघर्ष :-

हर्ष के काल से ही कन्नौज उत्तर भारत में सम्प्रभुता का प्रतीक एवं रणनीतिक महत्व का स्थान हो चुका था । पूर्वमध्यकाल में कन्नौज पर नियंत्रण करना बडी शक्तियों के लिए प्रतिष्ठा का विषय माना जाता था । लगभग 200 वर्षों तक तीन बडी शक्तियों – पाल, गुर्जर प्रतिहार तथा राष्ट्रकूटों में कई पीढियों तक कन्नौज के लिए संघर्ष चलता रहा । इसे ही त्रिपक्षीय संघर्ष कहा गया है। अंतिम रूप से इस संघर्ष में गुर्जर प्रतिहार विजयी हुए ।

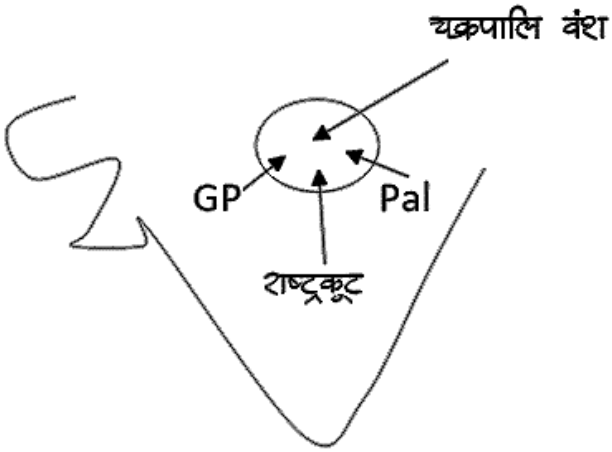

संघर्ष के कारण

(1) कन्नौज सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था ।
(2) कन्नौज का आर्थिक महत्व था ।

परिणाम

(1) सभी पक्षों की शक्ति एवं क्षमता में कमजोरी
(2) उत्तर भारत में राजनीतिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न हुई । इस संघर्ष के कारण किसी बडी शक्ति का उदय नहीं हुआ । अतः जब बाह्य आक्रमण होने लगा तब भारतीय शासक रक्षा करने में असफल हुए ।
(3) धन एवं जन की हानि ।

पूर्वमध्यकालीन प्रशासनिक विशेषताएँ

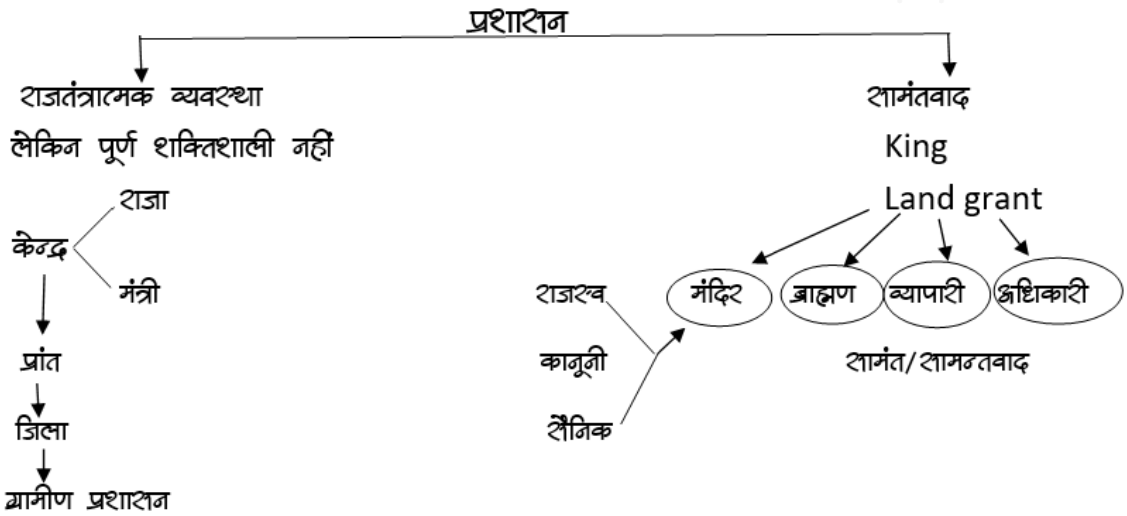

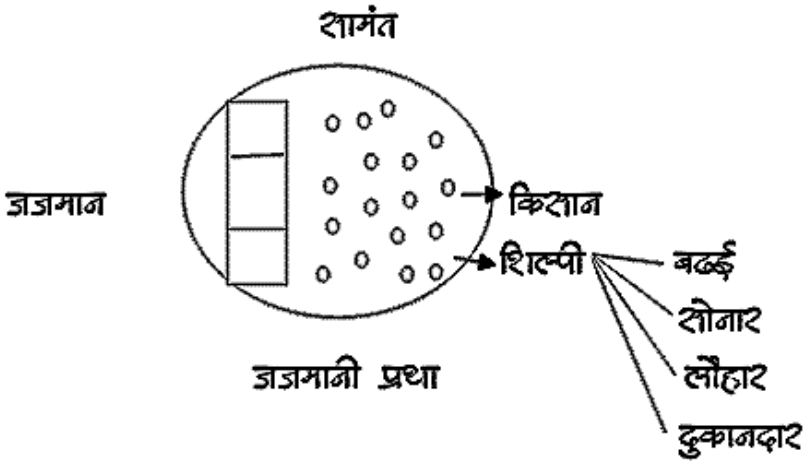

पूर्वमध्यकालीन राजनीति का स्वरूप मुख्यतः सामन्ती था । अनेक राजपूत राजतंत्रों की उपस्थिति थी । लेकिन इनकी प्रशासनिक एकाधिकार विभिन्न सामन्तों से प्रभावित होता था ।

<u>सामन्तवाद :कारण एवं प्रभाव</u> :- सामंतवाद एक राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था है । राजनीतिक पक्ष के तहत केन्द्र दुर्बल होता है तथा विभिन्न सामंत शक्तिशाली हो जाते थे । बंद अर्थव्यवस्था, नगरों का पतन, मुद्रा की बजाय वस्तु-विनिमय प्रणाली, आत्मनिर्भर, ग्रामीण समुदाय इसके मुख्य आर्थिक लक्षण है । इस व्यवस्था में समाज में अनेक रूढ़ियों का जन्म होता है । इसके सांस्कृतिक पक्ष के तहत धर्म एवं कला में स्तरीकरण, स्थानीय भाषा एवं साहित्य का उदय आदि दिखाई देता है ।

<u>सामंतवाद के कारण</u>

(1) भूमि अनुदान
(2) अनुदान भोगियों को राज्य द्वारा शक्ति का हस्तांतरण
(3) पुण्य की अवधारणा में परिवर्तन । पूर्वमध्यकाल में भक्ति एवं यज्ञ के बजाय भूमिदान को बडा पुण्यकर्म माना जाना ।

<u>पूर्वमध्यकालीन समाज</u>

जातियों के प्रगुर्णन के कारण
(1) अन्तवर्ती विवाह
(2) स्थानीयता के आधार पर
(3) पेशे के आधार पर

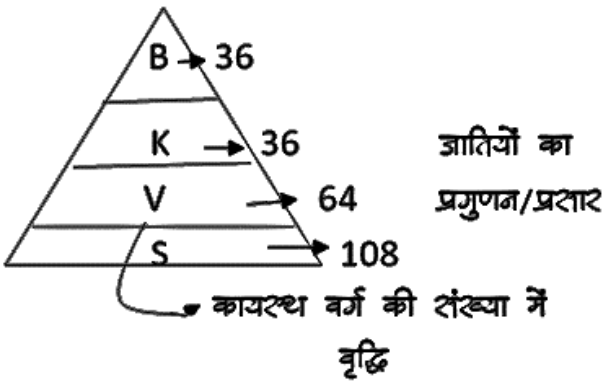

पूर्वमध्यकालीन समाज में पूर्व की अपेक्षा और गिरावट आई । जो निम्न है -
(1) इस समय जातियों की संख्या में भारी वृद्धि हुई। कल्हण (राजतरंगिणी के लेखक) ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों में 36-36, वैश्यों में 64 तथा शूद्रों में 108 जातियों का उल्लेख करते है ।
(2) जातीय विषमता एवं छुआछूत काफी चरम पर था। अलबरूनी चार वर्णों एवं 8 अंत्यजों (अस्पृश्य) की

चर्चा करता ।

(3) इस समय वैश्यों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति में गिरावट आई ।
हालांकि शूद्रों की स्थिति में सुधार हुआ । यही कारण है कि अलबरूनी कहता है कि वैश्यों तथा शूद्रों में कोई अंतर नहीं है ।

(4) यह काल स्त्रियों की दृष्टि से गिरावट का काल था। बाल विवाह, विधवाओं की दयनीय स्थिति, सती प्रथा, जौहर प्रथा (योद्धाओं की मृत्यु के पश्चात् पत्नियों द्वारा सामूहिक आत्मदाह) आदि के प्रचलन के प्रमाण मिलते हैं ।

<u>पूर्व मध्यकालीन अर्थव्यवस्था</u>

पूर्व मध्यकालीन अर्थव्यवस्था में कृषि को छोडकर अन्य सभी क्षेत्रों में गिरावट आई। जो निम्न है –

(1) कृषि : भूमि अनुदान के फलस्वरूप कृषि क्षेत्र का विकास हुआ ।

विभिन्न अनुदान भोगियों/सामन्तों ने कृषि में पूँजी एवं तकनीकी का निवेश किया । इस काल में सिंचाई के लिए अरघट्ट/घटियंत्र (कुएँ से पानी निकालने की तकनीकी, हर्षचरित में भी इसका उल्लेख है) की चर्चा मिलती है ।

दक्षिण भारत में विभिन्न सामन्तों तथा मंत्रियों ने तालाब तथा एनिकट का विकास कराया । दक्षिण भारत में सिंचाई के विकास के लिए भूमि अनुदान दिया जाता था जिसे एरिपत कहा जाता था ।

(2) इस काल में लम्बी दूरी के व्यापार में गिरावट आई ।
(3) मौद्रिक अर्थव्यवस्था तथा अनेक उत्पादन केन्द्रों का पतन हुआ ।
(4) नगरीकरण की दृष्टि से यह गिरावट का काल था ।
(5) यह बंद अर्थव्यवस्था तथा जजमानी प्रथा के उद्भव का काल था ।

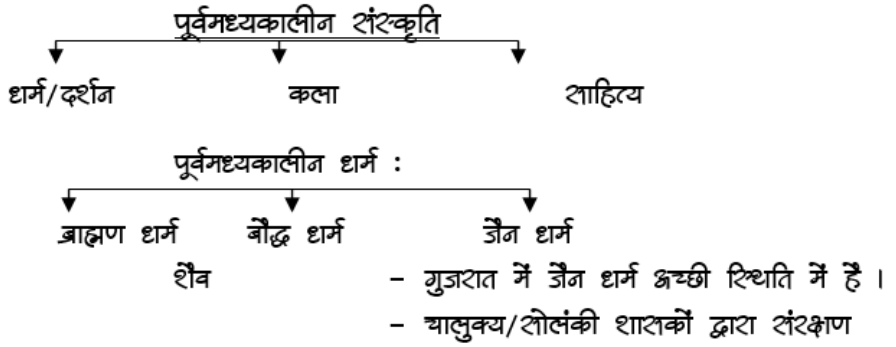

ब्राह्मण धर्म की स्थिति अच्छी थी । वैष्णव एवं शैव सम्प्रदाय दोनों विकसित थे, लेकिन शैवों में इस समय कई उपसम्प्रदायों की चर्चा मिलती है ।

<u>शैव धर्म एवं उप सम्प्रदाय</u> :

(1) पाशुपत सम्प्रदाय – इसके संस्थापक लकुलीश माने जाते हैं। इसमे शिव को सभी पशुओं (मानव सहित) का स्वामी माना गया है ।

(2) वीरशैव/ लिंगायत – इसके संस्थापक वासव थे जो कल्चुरी शासक विज्जल (कर्नाटक) के मंत्री थे। लिंगायत संप्रदाय के अनुयायी गले में शिवलिंग धारण करते थे। यह पंथ काफी क्रांतिकारी था जो जाति पाति, ऊँच नीच, छुआछूत आदि का विरोध करता था तथा महिला समानता की वकालत करता था । इस सम्प्रदाय ने कन्नड जैसी स्थानीय भाषाओं में प्रचार किया । इससे स्थानीय भाषा के विकास को बल मिला।

(3) नाथपंथी आंदोलन : यह आंदोलन हिमालय के तराई क्षेत्र (बस्ती, गोरखपुर, देवरिया) में विकसित हुआ। इसमे 9 नाथों की संकल्पना है जिसमें भगवान शिव भी एक थे । महेन्द्र नाथ तथा गोरखनाथ नाथों में सर्वाधिक प्रसिद्ध थे ।
नाथ संत अपने शरीर पर भस्म लपेटते थे तथा योग एवं श्वास अभ्यास करते थे । नाथों एवं सूफियों में आपस में काफी निकटता थी । अनेक सूफी संतो ने नाथों से योग एवं श्वास अभ्यास को ग्रहण किया जिसमें निजामुद्दीन औलिया मुख्य है ।

बौद्ध धर्म :

नये सम्प्रदायों की स्थापना

- वज्रयान
- कालचक्रयान } (भौतिकवादी)
- सहजयान

बौद्ध धर्म की लोकप्रियता में कमी एवं पतनः– इस काल में बौद्ध धर्म का पतन हुआ। इस समय बौद्ध धर्म को केवल बंगाल के पाल शासकों द्वारा संरक्षण दिया गया (पाल वज्रयान शाखा के संरक्षक थे)। अन्य स्थानों पर इसे संप्रदायों की स्थापना हुई । ये पहले जैसे सादगी वाले संप्रदाय नहीं थे बल्कि इनमें अंधविश्वास, तंत्र-मंत्र, जादू-टोना आदि का प्रवेश हो गया ।

बौद्ध धर्म के पतन के कारण

- ऊपर से पतन
  - हिन्दू धर्म की चुनौती
    - अवतार
    - शंकराचार्य
  - बाह्य आक्रमण तुर्की आक्रमण
- नीचे से पतन
  - कर्मकांड एवं भौतिक बुराइयों का का प्रवेश
  - व्यापार मे गिरावट के कारण वैश्यों का सहयोग नहीं मिलना

पूर्वमध्यकालीन तंत्र

तंत्रवाद का उदय
- बौद्ध धर्म
- ब्राह्मण धर्म
- जैन धर्म

पूर्वमध्यकाल में अनेक तांत्रिक संप्रदायों का उदय हुआ। जिसमें जादू-टोना, बलि आदि पर विशेष जोर दिया जाता था । तंत्र का प्रवेश सभी प्रमुख (बौद्ध, जैन, ब्राह्मण) धर्मों में हुआ ।

तंत्रवाद के उद्भव के कारण :-

(1) भूमि अनुदान एवं ब्राह्मणों का सुदूरवर्ती कबीलाई क्षेत्रों में पहुँचना एवं आदिवासियों की संस्कृति को ब्राह्मणीय संस्कृति से जोडना । इसके कारण आदिवासी परंपराओं का ब्राह्मण धर्म में प्रवेश हुआ ।
(2) पुजारी वर्ग द्वारा दान-दक्षिणा की प्राप्ति के लिए तंत्रवाद को बढावा दिया गया ।
(3) तंत्रवाद में रोग निवारण एवं जानवरों तथा कीटों से अनाजों की रक्षा करने की विधियाँ बताई जाती थी । इससे आम लोग तंत्रवाद की ओर अग्रसर हुए ।

पूर्वमध्यकालीन दर्शन :

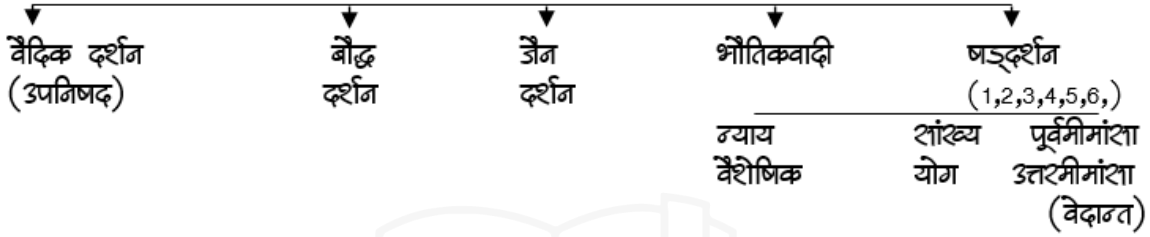

भारत दार्शनिक दृष्टि से विभिन्न मतों एवं मतांतरों का देश रहा है। यहाँ समयकाल में वैदिक/उपनिषद, बौद्ध, जैन, भौतिकवादी एवं षड्दर्शन का विकास हुआ है ।

षड्दर्शन : इसके तहत 6 चिंतन प्रणालियाँ आती हैं -

1. न्याय - इसके संस्थापक गौतम मुनि थे । इसमें तर्क पर काफी बल दिया गया है । जैसे -
   जहाँ - जहां धुआँ है
   वहां-वहां आग है
   पर्वत पर धुंआ है
   इसलिए पर्वत पर आग है

2. वैशेषिक : इसके प्रतिपादक उलुग कणाद हैं । यह भौतिकी से सम्बन्धित दर्शन है । इसमें परमाणुओं (atoms) से संबंधित है । इसमें माना गया है कि पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश आदि से मूल तत्वों का निर्माण होता है । भारत में भौतिकी का विकास इसी दर्शन से माना जाता है ।
3. सांख्य : इसके प्रतिपादक कपिल मुनि हैं। यह द्वैतवादी दर्शन है जिसमें जगत का कारण ईश्वर को नहीं माना गया है जबकि पुरुष तथा प्रकृति नामक दो तत्वों के मेल से जगत की उत्पति बतलाई गई है ।
4. योग : इसके प्रतिपादक पतंजलि थे । सांख्यकी भांति इसमें भी कई तत्वों की चर्चा है । इसमें यौगिक क्रियाओं तथा श्वास अभ्यासों पर विशेष बल दिया गया है । इसमें योग की आठ अवस्थाओं (अष्टांग योग) को बतलाया गया है ।
5. मीमांसा दर्शन :- इसके दो भाग है :-
   (a) पूर्वमीमांसा - इसके प्रतिपादक जैमिनी है । यह वैदिक कर्मकाण्डों की वकालत करता है । इसमें यज्ञों तथा कर्मकाण्डों को मोक्ष/मुक्ति का साधन माना गया है ।
   (b) उत्तरमीमांसा - इसे वेदान्त भी कहा जाता है । इसमें उपनिषदों के दर्शन की व्याख्या एवं विश्लेषण किया गया है । इसमें अनेक आचार्य हुए जिन्होंने उपनिषदों के सूत्रो की व्याख्या की । इसमें वादरायण, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माहवाचार्य आदि मुख्य हैं ।

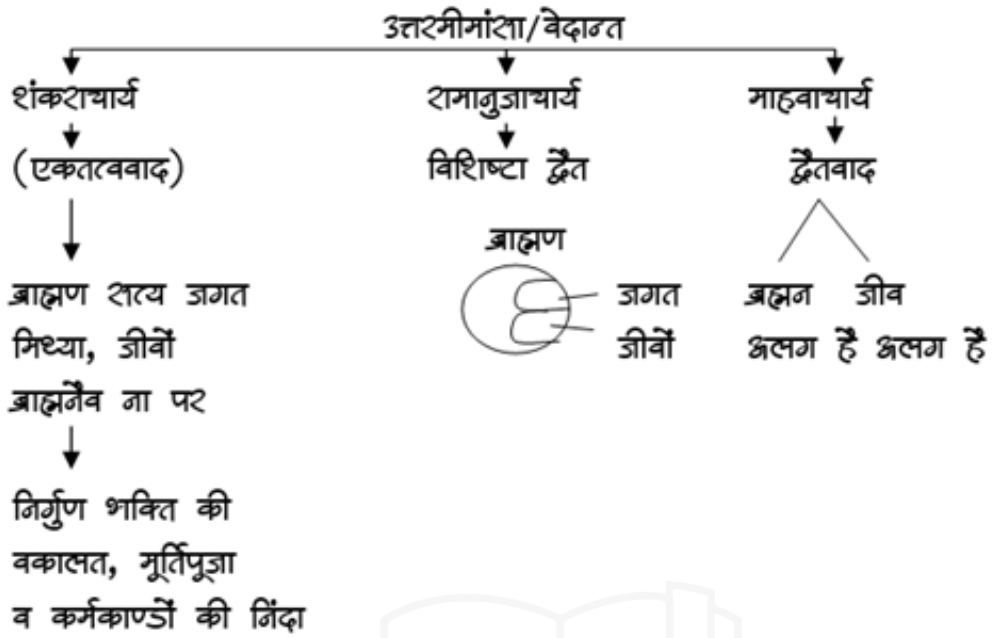

भाषा एवं साहित्य

पूर्वमध्यकाल में स्थानीयता की प्रवृत्ति के कारण अनेक क्षेत्रीय भाषाओं एवं साहित्य का विकास हुआ । वर्तमान प्रचलित भाषाओं में से अनेक गुजराती, मराठी, पंजाबी, उडिया, बंगाली, हिन्दी आदि का विकास हुआ । लेकिन इस काल के साहित्य में मौलिकता तथा सृजनात्मकता का अभाव था। इस काल की अधिकांश रचनाएँ आडम्बरपूर्ण, अतिश्योक्तिपूर्ण तथा टीकाओं के रूप में है ।

इस काल की महत्वपूर्ण रचनाएँ निम्न है :-

संगीत ग्रन्थ

पुस्तक	लेखक
संगीतमकरन्द	नारद
मानसोल्लास	सोमेश्वर III
संगीत रत्नाकर	सारंगदेव

इतिहास के ग्रन्थ

पुस्तक	लेखक
हर्षचरित	बाणभट्ट
नैषांकचरित	पद्मगुप्त
राजतरंगिणी	कल्हण
पृथ्वीराज रासो	चन्दरबरदाई